Paranoia

~~स्थिर व्यामोह वह मानसिक रोग है जिसमें~~

ऐसे तो व्यामोह सभी व्यक्ति में कभी न कभी पाया जाता है, परन्तु जब व्यामोह किसी व्यक्ति में स्थायी तथा व्यवस्थित रूप में पायी जाता है तो उसे स्थिर व्यामोह कहा जाता है। ~~Kahl~~ Kahlbaum ने 1863 ई० में सबसे पहले Paranoia शब्द का प्रयोग किया।

जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है- इसका मुख्य लक्षण व्यामोह होता है। इसके रोगी में विभ्रम का अभाव रहता है। व्यामोह से पीड़ित व्यक्ति बहुत ही विचित्र, संदेही, संवेदनशील तथा चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं। रोगी में कई तरह के व्यामोह पाये जाते हैं जिनमें दण्ड संबंधी व्यामोह, धार्मिक व्यामोह, लैंगिक व्यामोह, उच्च विचार संबंधी व्यामोह आदि मुख्य है। ऐसे रोगी को यह विश्वास रहता है कि सारी दुनिया उसके दुश्मन है। वे बचपन से ही डाही, उमंगी, जिद्दी, क्रोधी तथा अहंकारी स्वभाव ~~के~~ होते है।

Dynamic or Causes of Paranoia →

स्थिर व्यामोह के कारणों को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है —

(1) **जैविक कारक** — स्थिर व्यामोह के विकास पर वंशपरम्परा, शारीरिक रचना, अन्तःस्रावी उपद्रव आदि जैविक कारकों के प्रभाव का दावा किया जाता है। Kretschmer (1925) ने दावा किया कि आस्थेनिक को यह रोग अधिक होता है, परन्तु आधुनिक अनुसंधानों से इसकी पुष्टि नहीं होती है।*

(2) **मनोवैज्ञानिक कारक** → स्थिर व्यामोह के विकास में कई तरह के मनोवैज्ञानिक कारकों का हाथ होता है जैसे

* लेकिन इस बात का प्रमाण मिला है कि स्थिर व्यामोह का एक कारण अंतःस्रावी ग्रंथियों की विकृति भी अवश्य है।

Scanned with CamScanner

(i) दोषपूर्ण व्यक्तित्व विकास → व्यामोह से पीड़ित व्यक्ति बाल्यावस्था में अपेक्षाकृत अधिक शक्की, जिद्दी, एकांतप्रिय और क्रोधशील होते हैं। बड़े होने पर वे उदास, चिड़चिड़े और कटु स्वभाव के हो जाते हैं। उनमें स्नेहपूर्ण सम्बन्धों का अभाव होता है। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि अत्यधिक निरंकुशवादी, दमनकारी और आलोचनात्मक होती है जिसके परिणामस्वरूप उनमें हीनताभावना और आत्म-अवमूल्यन की भावना व्यक्तित्व का अंश बन जाती है।

(ii) असफलता एवं हीनताभावना → रोगी का पूरा जीवन सामाजिक, व्यावसायिक एवं वैवाहिक असफलताओं से भरा रहता है। ये असफलतायें उसमें हीनता-भावना को जन्म देती हैं। अपनी इस भावना को छिपाने के लिए वह झूठी श्रेष्ठ भावना का आवरण ओढ़ लेता है। वह दूसरों के मुख से अपनी प्रशंसा सुनने का भूखा रहता है परन्तु थोड़ी सी आलोचना को सहन नहीं कर सकता है।

(iii) प्रक्षेपण → व्यामोह उत्पन्न होने से पूर्व रोगी अपने अहं प्रतिरक्षा क्रियातन्त्रों में प्रक्षेपण का अधिकाधिक उपयोग करने लगता है। वह अपनी कमियों को न देखकर सदैव यही सोचता रहता है कि दूसरे लोग मेरी महानता एवं श्रेष्ठता से कुण्ठित हैं और मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं। यही प्रक्षेपण क्रियायें अतिरंजित होकर भ्रमासक्तियों में परिवर्तित हो जाती हैं।

(iv) कामुक कुसमायोजन → व्यामोह से पीड़ित रोगी का बाल्यावस्था में पालन-पोषण अत्यधिक कठोर कामुक आदर्शों, धर्माभिमान और अनुशासन के वातावरण में होता है। परिणामस्वरूप प्रौढ़ावस्था में सामान्य कामुक आवेग भी अवांछनीय और विघ्नकारी प्रतीत होते हैं और उसका वैवाहिक जीवन

कुसमायोजित हो जाता है।

(3) सामाजिक सांस्कृतिक कारण ⟶ सामाजिक सांस्कृतिक कारकों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्तर, सांस्कृतिक प्रतिरूप आदि मुख्य हैं। उच्च-सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा उच्च शैक्षिक स्तर के लोगों में स्थिर-व्यामोह का रोग अधिक पाया जाता है।

Treatment — स्थिर-व्यामोह के रोगियों के उपचार में मनोचिकित्सा तथा आघात चिकित्सा से लाभ मिलता है।

=

Scanned with CamScanner